RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-10
October-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

राजनीति के आदर्श राष्ट्रवादी कवि अटल बिहारी वाजपेयी

रचना

शोधार्थी (Phd), हिंदी विभाग, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 10 October 2018

Keywords
राजनीतिज्ञ, इतिहास, परिमार्जित

ABSTRACT

युग पुरूष जीवंत राजनीतिज्ञ अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय राजनैतिक इतिहास के सबसे लोकप्रिय राजनेता थे। ओजस्वी वाणी के धनी अटल जी की भाषा पर जबरदस्त पकड़ थी। अपने संस्कारों के अनुरूप उन्होंने खड़ी बोली के परिनिष्ठित, परिमार्जित और परिष्कृत रूप को ही अपनाया। अपने भाषणों में प्रयुक्त शब्दावली से अपने विरोधियों को भी मंत्रमुग्ध करने वाले कवि मंचों के इस महनीय कवि को शब्दों का बाजीगर कहा जा सकता है।

प्रस्तावना

अटल बिहारी वाजपेयी एक ऐसी शख्सियत हैं जिन्होने सम्पादक के रूप में अपना जीवन शुरू किया। उनकी लेखनी व उनकी भाषा शैली में जो जादू था वह लोगों के सर चढ़कर बोलने लगा। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की विचारधारा से ओतप्रोत वह शख्स राष्ट्र की परिभाषा गढ़ता गया। यह राष्ट्र मेरा मन्दिर है, यह देश मेरा मन्दिर है; मुझे आजीवन केवल और केवल इस मन्दिर की पूजा करनी है, यह लक्ष्य लेकर जीवन जिया और यही लक्ष्य लेकर मृत्यु का आलिंगन किया। अटल जी छोटी सी आयु में सांसद बने। भाषणशैली और उनकी विद्वता के कायल हुए पंडित जवाहर लाल नेहरू जी एक दिन बरबस बोल बैठे कि आपको देश का नेतृत्व करना है। सन 1957 में पंडित जवाहर लाल नेहरू जी ने जो भविष्यवाणी की थी कि एक दिन आप देश के प्रधान मंत्री होंगे सत्य साबित हुई ।

माननीय अटल जी हास्य और व्यंग्य के बहुत बड़े जानकार थे। एक बार हिमाचल के सोलन में एक जनसभा का आयोजन था। मैदान छोटा था और आयोजकों ने सोचा कि मंच का स्थान भी जनसभा के लोगों के लिए रख दिया जाये। वहां पर एक बहुत बड़ा डंगा था और उस डंगे के पीछे बैठने की जगह थी और उसको मंच बना दिया गया। अटल जी आये और मंच पर गये। जब भाषण देने के लिए खड़े हुए तो उन्होंने अपनी शैली में कहा कि मैं हिमाचल प्रदेश के सोलन में आया था। मुझे लगता था कि मैं किसी मंच पर आऊंगा और मंच से संबोधित करूंगा लेकिन आप लोगों ने मुझे मचान पर चढ़ा दिया। उनमें इस प्रकार का व्यंग्य और सारे समाज को एकदम साथ लेने की कला थी।

काव्य परम्परा विरासत में मिलने के कारण अटल बिहारी वाजपेयी जी कविता के मर्मज्ञ थे। उन्होने अपने संस्कारों के अनुरूप खडी बोली के परिष्कृत, परिमार्जित रूप को ही स्वीकारा।[1] कोई अन्य भाषा लिखने की उनकी कोई इच्छा नहीं थी। काव्य तत्वों से वे भली–भांति अवगत थे तथा उन्हें अच्छी–बुरी कविता की पहचान थी।

अटल जी और राष्ट्र प्रेम

अटल जी की देशभक्ति की मिसाल देखें। जब 1971 में भारत–पाकिस्तान का युद्ध हुआ तो पूरा देश पाकिस्तान के खिलाफ खड़ा हो, इसके लिए अटल जी ने स्वर्गीय श्रीमती इन्दिरा गांधी को रणचण्डी की संज्ञा दी और कहा कि दुश्मनों का सर्वनाश कर दो। अटल जी कहते थे कि भारत में रहते हुए हमारी वैचारिक भिन्नता हो सकती है परन्तु देश के दुश्मनों के सामने हम सब भारतवासी एक हैं। परन्तु केवल 4 वर्ष उपरांत 1975 में जब देश में आपातकाल लगाय लोकतंत्र खतरे में पड़ गया तो जेल की सलाखें भी उनके तेज को न रोक पाई और पहली गैर–कांग्रेसी सरकार देश में बनी, जिसमें विदेश मंत्री के नाते अटल जी ने विश्व में भारत का लोहा मनवाया। अटल जी जिस विचार के थे –

"अश्वं नैव गजं नैव व्याघ्रं नैव च नैव च।
अजापुत्रं बलिं दद्यात देवो दुर्बलघातकः।।"

अर्थात न अश्व, न हाथी और न शेर और किसी अन्य की बलि नहीं दी जाती है। बलि केवल बकरी के बच्चे की दी जाती है। इसलिए मेरे राष्ट्र को शक्ति सम्पन्न बनना होगा। इसी दिशा में 13 मई, 1998 को पोखरन–2 का विस्फोट दुनिया को सकते में डालने वाला था। इसके कारण भारत पर अनेक प्रकार के प्रतिबन्ध भी लगे। उनकी परवाह किये बिना अटल जी ने हमारे देश को परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र बनाया। विश्व के पटल पर भारत की छवि कैसी हो,

[1] मेरी इक्यावन कविताएँ, अटल बिहारी वाजपेयी, किताब घर प्रकाशन, 4855–56/24, तीसवां संस्करण, सम्पादक डॉ. चन्द्रिका प्रसाद शर्मा , पृष्ठ 146

RRIJM 2015, All Rights Reserved

पाकिस्तान व अन्य पड़ोसी देशों के साथ हमारे संबंधों की विवेचना, उसमें अटल जी का कोई सानी नहीं था।

अटल जी ने कहा था कि देश की सीमाओं की रक्षा के लिए बलिदान देने वाले प्रहरी शहीद हैं, उनकी शहादत को देशवासी नमन करें, यह जज्बा पहली बार कारगिल युद्ध के दौरान अटल जी ने पैदा किया। वीरांगनाओं का सम्मान, शहीद सैनिकों की उनके पैत्रिक स्थान पर राजकीय सम्मान के साथ अन्तेष्टि और उनके परिवार को अनेक प्रकार की सुविधाओं की शुरूआत करना उनके जज्बे को दर्शाता है और आज पूरा देश उस जज्बे को सलाम कर रहा है। लोकतंत्र के सच्चे प्रहरी, जिसने आपातकाल का डटकर विरोध किया, लोकतंत्र की पुनः स्थापना में सर्वस्व लगाया।

उनका मंत्र था– देश पहले, पार्टी उसके बाद और मैं सबके बाद। उनका ध्येय था भारत राष्ट्र को परम वैभव पर ले जाना। उनका सदैव यह वाक्य रहा कि जो आजादी हमें मिली है उसके लिए हजारों, लाखों लोगों ने बलिदान दिया, हमें उन बलिदानियों का कर्ज चुकाना है। उनकी एक कविता की भाषा शैली जिसका केवल एक अंतरा प्रस्तुत है जो बलिदानियों के लिए समर्पित है –

जो बरसों तक सड़े जेल में, उनकी याद करें,
जो फांसी पर चढ़े खेल में, उनकी याद करें।
याद करें काला पानी को,
अंग्रेजों की मनमानी को,
कोल्हू में जुट तेल पेरते,
सावरकर से बलिदान को।
याद करें बहरे शासन को,
बम से थर्राते आसन को,
भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु
के आत्मोत्सर्ग पावन को।
दया की मत फरियाद करें,
उनकी याद करे।[2]

अर्थात् बलिदानी जिन्होंने देश को आजादी दिलाई उनके प्रति उनके समर्पण के भाव थे। उनके मन में भारतीय संस्कृति, भारतीय शास्त्रों के प्रति अगाढ़ श्रद्धा थी। उन्होंने कहा था कि– राष्ट्र केवल भूमि का टुकड़ा मात्र नहीं है परंतु हमारी हजारों साल पुरानी संस्कृति इस राष्ट्र की आत्मा है। उनकी कविता की चंद पंक्तियां जो उन्होंने कही और कैसे उन्होंने इसे सुंदर शब्दों में पिरोया है, प्रस्तुत हैं–

वेद–वेद के मंत्र–मंत्र में,
मंत्र–मंत्र की पंक्ति–पंक्ति में,
पंक्ति–पंक्ति के शब्द–शब्द में,
शब्द–शब्द के अक्षर स्वर में,
दिव्य ज्ञान–आलोक प्रदीपित,
सत्यं, शिवं, सुंदरं शोभित,
कपिल, कणाद और जैमिनि की
स्वानुभूति का अमर प्रकाशन,
विशद–विवेचन, प्रत्यालोचन,
ब्रह्मा, जगत, माया का दर्शन।
कोटि–कोटि कंठों में गूंजा
जो अति मंगलमय स्वर्गिक स्वर,
अमर राग है, अमर राग है।[3]

एक संतुलित व्यक्तित्व अटल जी

अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा देश के प्रधान मंत्री के रूप में दिए गए अविस्मरणीय योगदान, उनके महान व्यक्तित्व, मानवतावादी दृष्टिकोण, कवि के रूप में लोकप्रिय छवि तथा उनके समग्र जीवन, देश–प्रेम और उनकी भाषा शैली जो देश के लिए समर्पित थी।

आओ फिर से दिया जलाएं,[4] **गीत नया गाता हूं** ।[5].....

भाव प्रवण कविताएं लिखने वाले भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी 93 वर्ष के गरिमापूर्ण राजनैतिक जीवन हों मगर उनका आचार विचार और जीवन दर्शन भारत और भारत के सवा सौ करोड़ देशवासी कभी नहीं भूल पाएंगे। निसंदेह सत्ताओं को झकझोर देने वाली वो अटल आवाज हमेशा के लिए हमारे संसदीय और राजनैतिक इतिहास की धरोहर बन गई है।

संसद में मान मर्यादा, गरिमा और सरोकारों की राजनीति का कई दशकों तक झंडा लहराने वाले भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी भारत के प्रतिष्ठावान राजनेता थे। आज सवा सौ करोड़ लोगों वाले देश में वाजपेयी एक ऐसे नेता थे जो हर दिल अजीज थे और दलों की सीमाओं से कहीं दूर जन जन के प्रिय थे। अपनी गरिमामय राजनैतिक शैली और राजनीति में कमर से नीचे वार न करने की कसम उन्होंने कभी नहीं तोड़ी। आगे अटल जैसा राजनेता होना राजपथ पर चलने वालों का एक सुनहरा सपना होगा। देश की संसद और विधायिका अटल जैसे जनप्रतिनिधि का हमेशा इंतजार करती रहेगी।

'अटल'... एक यात्रा, जिसके अनगिनत पड़ाव– MP Breaking News के अनुसार असल में अटल होना आसान नहीं होता है। अटल वही हो सकता है जो विचार पर अटल हो, व्यवहार में अटल हो, विनम्रता में अटल हो, नैतिकता में अटल हो।भारत में अटल वही बनता है जिसकी राजनैतिक

[2] क्या खोया, क्या पाया, संस्करण–2019, प्रकाशक राजपाल एण्ड संज, संपादक : कन्हैया लाल नंदन, पृष्ठ संख्या 73

[3] क्या खोया, क्या पाया, संस्करण–2019, प्रकाशक राजपाल एण्ड संज, संपादक : कन्हैया लाल नंदन, पृष्ठ संख्या 62

[4] चुनी हुई कविताएँ, अटल बिहारी वाजपेयी, संस्करण–2018, प्रभात पेपरबैक्स, ISBN-978-93-5048-163-9 पृष्ठ संख्या 101

[5] Tweenty one poems atal bihari Vajpayee Penguin Random House ISBN 9780670091843 Page 64

शुचिता अटल हो, जिसके सिद्धांत अटल हों और हमेशा अटल रहने वाले जीवन मूल्य हों।

मध्यप्रदेश के ग्वालियर शहर में जन्मे अटल बिहारी वाजपेयी का पुस्तैनी पुराना सामान्य सा घर भारतीय लोकतंत्र की ताकत का दस्तावेज है। शिन्दे की छावनी कमल सिंह का बाग नामक एक संकरे मोहल्ले में रहने वाले एक ब्राहमण परिवार के बेटे अटल बिहारी वाजपेयी एक गरिमापूर्ण राजनैतिक हस्ती बनेंगे किसने सोचा था। न उनके परिवार ने इस बेटे में भारतीय राजनीति का ओजस्वी सूरज देख पाया होगा न पड़ोसी उसके कृतित्व को समझ पाए होंगे। ये संभव ही नहीं होता। ऐसी दिव्यदृष्टि लोगों को मिल जाती तो क्या नहीं होता मगर आगे बड़ते कदम जीवन की दिशा बता जाते हैं।

ग्वालियर में जन्मे अटल बिहारी वाजपेयी उन अनवरत राजनेताओं में से थे जिन्होंने जवाहरलाल नेहरु से लेकर भारत के कई प्रधानमंत्रियों को सत्ता में बैठते और उतरते देखा था। कवि हृदय अटल बिहारी वाजपेयी आचार विचार, संस्कार और सिद्धांत की राजनीति करने वाले जननेता थे। अटल बिहारी वाजपेयी चाहे जब 2 सांसद वाली भाजपा के नेता हों या फिर 1996, 1998, 1999 में भारत के प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने वाले नायक हों उनका व्यवहार और तेवर कभी नहीं बदले। राजनीति में वे समय दर समय कभी विपक्ष कभी पक्ष सहित तमाम अलग अलग कर्तव्य और भूमिकाओं में रहे मगर उनके अंदर बिन बाधा के निरंतर ही भावनाशील कवि हृदय सदा बना रहा।

भारत की पहली राष्ट्रवादी सरकार के जननायक अटल बिहारी वाजपेयी एक दिन भारत के प्रधानमंत्री बनेंगे ये भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरु ने क्यों कहा था ये पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के राजनैतिक सफर और उसके गौरव को जान समझकर बेहतर जाना जा सकता है। वे पहले 13 दिन के लिए सत्ता में आए और विश्वासमत पर सत्य की भाषा बोलकर विपक्षियों को शर्मिन्दा कर गए। उन्हें देश से आगे इतना अधिक प्रेम और दुलार मिला कि भारतीय जनता पार्टी नई लोकसभा सीटें लाकर गठबंधन सरकार की अगुआ बनी। 1998 में देश के विभिन्न मत मतांतर वाले 13 दलों को साथ जोड़कर भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी ने देशहित में बेहतर सरकार चलाई।

उनकी इस सरकार के खिलाफ आया विश्वासमत सिर्फ एक वोट से गिरा जिसे वे आसानी से जीत सकते थे मगर अटल बिहारी वाजपेयी की शख्सियत ही कुछ ऐसी रही जिसमें समझौते की राजनीति की कभी कोई गुंजाइश नहीं थी। जो दल उन्हें सत्ता से गिराने के लिए सांप और छडूंदर की दोस्ती को साकार करते दिखे उनके असली चरित्र को न केवल पूरे देश ने देखा बल्कि उस राजनैतिक छल प्रपंच और अवसरवाद ने 13 महीने बाद विश्वासमत में पराजित तत्कालीन प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी को पूरे देश का अभिमन्यु बना दिया।

आगे अधिक जनमत और अधिक बहुमत से 1999 में अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में देश में तीसरी दफा एनडीए की सरकार जनता के उसी विश्वास के कारण भारत में बनी। ये सरकार मजबूती से चली। लाल किले पर कवि हृदय प्रधानमंत्री अटलजी का देश को संबोधन भारत के करोड़ों लोगों की यादों में आज तक है। वे देश को विकास की राह दिखाते चले गए। सबका साथ, सबका विकास अटल के नेतृत्व में भारत ने देखा। किसी कवि का भारत के सबसे बड़े जनता सिंहासन पर बैठना हर भारतवासी के लिए गर्व का विषय बना।

केन्द्र में 13 दलों की गठबंधन सरकार के साथ अटल बिहारी वाजपेयी के समय में भारत ने पोखरन विस्फोट करके पूरी दुनिया को अपनी ताकत का एहसास कराया। तमाम अमरीकी प्रतिबंधों के बाबजूद भारत ने पोखरन विस्फोट के शौर्य पर डटे रहकर पूरी दुनिया में अपना डंका बजवाया। अटल कवि हृदय पहले थे राजनेता बाद में।

'अटल'... एक यात्रा, जिसके अनगिनत पड़ाव– MP Breaking News के अनुसार वे पाकिस्तान से शांति और मैत्री के संबंध चाहते थे। लाहौर यात्रा में वे बस से शांति का पैगामा लेकर गए थे और नवाज शरीफ से अमन की बात पर गले मिले थे मगर परवेज मुसर्रफ जैसे सेनानायक पाकिस्तान को अमन की बजाय कारगिल के किनारे ले गए। तब अंतर्मन से क्षुब्ध अटल ने उस वक्त राष्ट्र के नाम भावुक संदेश में कारगिल के गुनाहगारों को न भूलने वाला संदेश देने की बात कही थी।

इसके बाद पूरे देश ने देखा। कश्मीर घाटी से कारगिल की ओर निरंतर तोपें गरजी और आखिरकार टाइगर हिल पर भारत का तिरंगा फहरा दिया गया। अटल के कार्यकाल में स्वर्णिम चर्तुभुज और पूर्व पश्चिम गलियारा, उत्तर दक्षिण गलियारा आधारभूत सौगातें रहीं। भारत के लाखों गांवों को पक्की सड़क देने वाले वे पहले प्रधानमंत्री रहे। आज भी अटलजी के समय की प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना गांव गांव की आबादी को पक्की सड़क की सौगातें दे रही है। उनके कार्यकाल में राजनैतिक मूल्य अपने श्रेष्ठ रुप में रहे। संसद में तब भी बहस होती रहीं मगर कमर के नीचे वार न करने की परिपाटी उनके समय में सबसे मजबूत बनी रही।

अटल जनसंघ से लेकर भारतीय जनता पार्टी पार्टी की यात्रा तक निरंतर शिखर नेता रहे मगर उनके लिए आदर्श और सिद्धात सर्वोच्च शिखर पर रहे। वर्तमान प्रधानमंत्री और तब के गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी अटलजी की वो नसीहत कभी नहीं भूल पाएंगे जो उन्होंने राजधर्म पालन करने की बात करके दी थी।

लंबे समय से बीमार चल रहे भारतमाता के महान सपूत भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी 16 अगस्त 2018 को

RRIJM 2015, All Rights Reserved

अपने करोड़ों प्रशंसकों को लाखों स्मृतियां देते हुए रोता बिलखता छोड़कर अजर अमर यात्रा के लिए निकल पड़े। क्या पक्ष, क्या विपक्ष, क्या हिन्दू, क्या मुस्लिम, क्या देश क्या दुनिया हर खास और आम ने तब भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी के सरोकारो में पगी, राष्ट्रवाद के लिए गरजती खनकदार आवाज को बार बार हजारों बार याद किया था और निरंतर करते कर भी रहे हैं। करोड़ों देशवासी उनके बीमार रहते उनके लिए खूब दुआ करते रहे कि काश अटलजी जीवन की ओर फिर लौट आएं। उनकी उखड़ती सांसें जीवन का दिया फिर से जला जाएं। मगर अटल तो बस अटल थे। स्वतंत्रता दिवस का उल्लास मनवाकर 16 अगस्त को हमसे विदा हो गए।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि अटल जी काव्य जगत व भारतीय राजनीति के ऐसे शिखर पुरूष है जिन्होंने अपने विचारों के सुनिश्चित स्वरूप और शिल्प के ताजेपन से अपनी कविताओं को न केवल सुपाठ्य बनाया बल्कि अपनी भाषण कला से भी हर किसी को चकित कर दिया। अपनी शब्दावली और उसके प्रस्तुतीकरण के सभी कायल हैं। शब्दों के इस बाजीगर को शत–शत नमन।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मेरी इक्यावन कविताएँ, अटल बिहारी वाजपेयी, तीसवां संस्करण, सम्पादक डॉ. चन्द्रिका प्रसाद शर्मा ,
2. चुनी हुई कविताएँ, अटल बिहारी वाजपेयी, संस्करण–2018, प्रभात पेपरबैक्स, ISBN-978-93-5048-1
3. Tweenty one poems atal bihari Vajpayee Penguin Random House ISBN 9780670091843
4. क्या खोया, क्या पाया, संस्करण–2019, प्रकाशक राजपाल एण्ड संज, संपादक : कन्हैया लाल नंदन,

RRIJM 2015, All Rights Reserved